INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान पटवार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB)

भाग – 4

भूगोल (भारत + राजस्थान) , कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "राजस्थान पटवारी नोट्स" को एक विशिष्ट अपने – अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB) द्वारा आयोजित करायी

जाने वाली परीक्षा "राजस्थान पटवारी भर्ती परीक्षा में पूर्ण सहायक सिद्ध करेंगे।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित है।

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

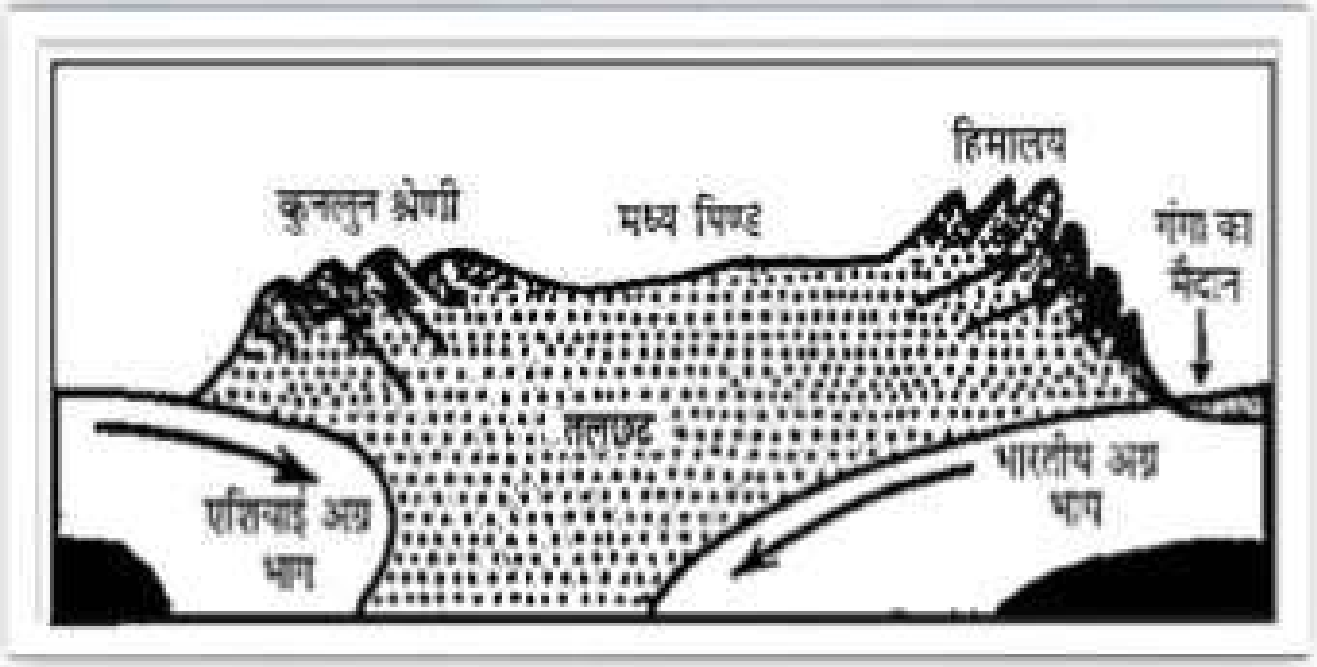
WhatsApp करें – https://wa.link/0yupe6

Online Order करें – https://shorturl.at/pwFNP

मूल्य : (₹)	संस्करण : नवीनतम

	भारत का भूगोल	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	सामान्य परिचय	1
2.	भारत की स्थिति व विस्तार	2
3.	प्रमुख स्थलाकृतियाँ	8
4.	मानसून तंत्र व वर्षा का वितरण	26
5.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	39
6.	मृदा	52
7.	वन एवं वनस्पति	55
8.	प्रमुख फसलें	61
9.	प्रमुख खनिज	69
10.	ऊर्जा संसाधन	75
11.	पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय मुद्दे	81
	राजस्थान का भूगोल	
1.	सामान्य परिचय	95
2.	प्रमुख भू - आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं	114
3.	जलवायु की विशेषताएं	126
4.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	138
5.	प्राकृतिक वनस्पति	157
6.	मृदा	167
7.	प्रमुख फसलें	172
8.	राजस्थान में पशुपालन	182
9.	प्रमुख उद्योग	190
10.	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें	193

11.	जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात एवं प्रमुख जनजातियाँ	203
12.	खनिज-धात्विक एवं अधात्विक	213
13.	ऊर्जा संसाधन- परम्परागत एवं गैर परम्परागत	225
14.	जैव विविधता एवं इनका संरक्षण	234
15.	पर्यटन स्थल एवं परिपथ	239
	कला संस्कृति	
1.	स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं • मंदिर • राजस्थान की मस्जिदें , दरगाह एवं मकबरे • किले एवं महल(स्मारक) • राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ • राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ	254
2.	चित्रकलाएं	290
3.	हस्तशिल्प	300
4.	राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ	308
5.	मेले एवं त्यौहार	321
6.	लोक संगीत एवं लोक नृत्य • राजस्थान के लोक नाट्य	333
7.	राजस्थानी संस्कृति ,परम्परा एवं विरासत	356
8.	वेशभूषा एवं आभूषण	361
9.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन	364
10.	लोक देवियाँ एवं लोक देवता	373



इसे भौगोलिक दृष्टि से तीन मुख्य भागों में बांटा जाता है–

1. महा हिमालय (Greater Himalaya)
2. लघु हिमालय (Lesser Himalaya)
3. शिवालिक हिमालय (Shivalik Himalaya)

NOTE- कुछ भूगोलवेत्ता ट्रांस हिमालय को भी इसका भाग मानते हैं



ट्रांस हिमालय :- ट्रांस हिमालय का सिंधु हिमालय से भी पहले हो चुका था।

- इसके अन्तर्गत काराकोरम, लद्दाख, कैलाश व जास्कर श्रेणी आती है।
- इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।

(A) काराकोरम श्रेणी –

- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।
- इसकी चौड़ाई लगभग 1406 लगेल हेडल से की गई।
- इस श्रेणी को "दर्रों की रीढ़" कहा जाता है।
- भारत की सबसे ऊँची चोटी k2 या गाडविन ऑस्टिन (8611मी.) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
- यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा से स्थित है।
- काराकोरम दर्रा (विश्व का सबसे ऊँचा दर्रा) काराकोरम पर्वतमाला पर स्थित अक्साईचिन को चीन से जोड़ने वाला सर्वोत्तम दर्रा है। काराकोरम पर्वतमाला पर भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है।
- विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है। सियाचिन ग्लेशियर से बुजुर्ग नदी का उद्गम होता है जिसके प्रवाह क्षेत्र में घाटी का विस्तृत होता है।
- काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख ग्लेशियर स्थित हैं।
- सियाचिन (72 km)
- बाल्टोरो – (58km)
- बीयाफो – 63 km
- हिस्पर (61 Km)

(B) लद्दाख श्रेणी – विश्व की सबसे तीव्र ढलान वाली चोटी राकापोशी (7788मी.) लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है।

- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलास श्रेणी के रूप में स्थित है।
- यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- इस श्रेणी में भारत का सबसे ऊँचा पठार "लद्दाख का पठार" स्थित है इसी पठार पर झू तापीस जलवी के लिए प्रसिद्ध पूंगा घाटी स्थित है।
- यह भारत का न्यूनतम वर्षा वाला क्षेत्र द्रास स्थित है।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलास है।
- इस क्षेत्र में अवसादनल की झीलें जैसे- दाल और वुलर तथा लवणजल झीलें जैसे- पैंगोंग त्सो (लद्दाख घाटी के समानांतर यह विश्व की सबसे ऊँची चारे वाली की झील है) और त्सोमुरीरी भी पाई जाती है।

(C) जास्कर श्रेणी –

- यह लद्दाख हिमालय के समानांतर दक्षिणी दिशा में स्थित है।
- लांगा चर्पत इस चर्पत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणियों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है। इस श्रेणी में स्थलीय नदी प्रवाहित होती है।

उत्तरी हिमालय ग्रेट् या हिमाद्रि या महान हिमालय –

- इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरवा पर्वत तक धनुष की आकृति से फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2,500 km तक है तथा औसत ऊँचाई 5000– 6000 मी. तक है।
- उत्तरी हिमालय को भौतिक विभाजन के दृष्टिकोण से दो भागों में बाँटा जा सकता है–

विश्व की लगभग ऊँची चोटियाँ इसी श्रेणी पर पाई जाती हैं जिसमें प्रमुख हैं–

- माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊँची चोटी
- कंचनजंगा (8548 मी.)
- लहोत्से (8481 मी.)
- धौलागिरी (8172 मी.)
- अन्नपूर्णा (8076 मी.)
- नंदा देवी (7817 मी.)
- एवरेस्ट को पहले लिखुंग में चोमोलुंगमा के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ पर्वतों की रानी।
- एवरेस्ट, कंचनजंगा, लहोत्से, धौलागिरि, नंगा पर्वत, नामचा बरवा इसके महत्त्वपूर्ण शिखर हैं।
- भारत में हिमालय की सर्वोच्च ऊँची चोटी कंचनजंगा यहीं स्थित है। यह विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- काराकोरम हिमालय करेवा (karewa) के लिए भी प्रसिद्ध है, यहाँ लायदराल (केसर की खेती)की खेती की जाती है।
- वृहत हिमालय में नोमेनिया, पीर पंजाल,धौलाधार, नागटिबा श्रेणी में रोहतांग और लद्दाख श्रेणी में चांगलुनामा जैसे महत्त्वपूर्ण दर्रे स्थित हैं।
- सिंधु तथा इसकी सहायक सतलुज, झेलम और चेनाब इस क्षेत्र को प्रवाहित करती है। यह हिमालय शिवालिक सीढ़ियों और चतुर्भुज दून स्थलों के लिए जाना जाता है। हिमालय की यहाँ रोमांचक ट्रेकिंगवाली पर्वतारोही के लिए आकर्षण का केंद्र है जिसमें प्रमुख तीर्थस्थल- जैसे रीवालसर झील, अमरनाथ गुफा और चरार - ए - शरीफ इत्यादि है।

लघु या मध्य या हिमाचल हिमालय –महान हिमालय के दक्षिण में तथा शिवालिक के उत्तर में इसका विस्तार है। इसकी सामान्य ऊँचाई 1800– 3000मी. है।

- इसके अंतर्गत कई श्रेणियाँ पाई जाती हैं।
- पीर पंजाल (जम्मू कश्मीर)
- धौलाधार (हिमाचल प्रदेश)
- नाग टिब्बा (उत्तराखण्ड)
- कुमायूँ (उत्तराखण्ड)
- महाभारत (नेपाल)
- लघु हिमालय तथा महान हिमालय के बीच कई घाटियों का विस्तार हुआ है।
- कश्मीर की घाटी (जम्मू कश्मीर)
- कुल्लू - कांगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश)
- कठमांडू घाटी (नेपाल)
- लघु हिमालय अपने नगरीकरणीय पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसके अंतर्गत शामिल है – कुल्लू, मनाली, डलहौजी, धर्मशाला, शिमला (हिमाचल प्रदेश), अल्मोड़ा, नैनीताल, मसूरी (उत्तराखण्ड)
- लघु हिमालय की श्रेणियों की ढालों पर सीढ़ीनुमा खेत के सौंदर्य पाये जाते हैं जिन्हें जम्मू-कश्मीर में 'कारी' (तुलसन्ती, सोलनगी) व उत्तराखण्ड में 'बुग्याल व पलार' कहा जाता है।
- उच्च हिमालय शिवालिक या बाह्य हिमालय :-
- लघु हिमालय के दक्षिण में शिवालिक हिमालय की अवस्थिति को बाह्य हिमालय के नाम से जानते हैं। यह लघु हिमालय के दक्षिण में स्थित है।

- शिवालिक और लघु हिमालय के बीच स्थित घाटियों को पश्चिम से दून (जैसे- देहरादून, कोटलीदून, पटलीदून) व पूर्व से दुआर (जैसे- हल्द्वानी) कहते हैं।
- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियों तथा अरुणाचल प्रदेश में डफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)- शिवालिक हिमालय में पाये जाने वाली लम्बवृत्ती घाटियाँ चोस कहलाती है।

करेवा- पोटवंगनाल श्रेणी के विलगित के समय कश्मीर घाटी में कुछ अन्तर्भागी झीलों का विलगित हुआ था नदियों के द्वारा लेकर आए अवसाद के कारण ये झीलें अवसाद से भर गई। ऐसे उपजाऊ क्षेत्रों में जाफरान / केसर की खेती की जाती है, जिसे करेवा कहा जाता है।

अल्पाइन- जम्मू और कश्मीर में पहले पायी जाने वाली घुमन्तू प्रकृतिवाद, बुग्याल, भूटिया इत्यादि लघु हिमालय में इसी के विस्तारों के उपरान्त विलित होने वाले घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराने के लिए प्रवास करते हैं तथा ये पुनः सर्दियों के दिनों में मैदानी भागों में आ जाते हैं जिसे अल्प प्रवास कहा जाता है।

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय का ही विस्तार हैं

- लालथा क्रमा के निकट हिमालय अक्षीसंधीय मोड़ के कारण दक्षिण की ओर मुड़ जाता है। पटकाईबुम, नागा, मणिपुर पुराई, या लिंगो पहाड़ी आदि हिमालय का विस्तार माना जाता है यह पहाड़ियाँ भारत एवं म्यांमार सीमा पर स्थित हैं।



पूर्वांचल की पहाड़ियाँ काफी कटी - फटी हैं।

- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ भ्रंशोत्थ भ्रंशमूल को दिशा प्रदान करती हैं। इस तरह यह पहाड़ियाँ भ्रंश दिशात्मक के साथ - साथ भ्रंशोत्थ दिशात्मक हैं।

अरुणाचल प्रदेश	डफला, मिरी, अबोर व मिश्मी (शिवालिक हिमालय) पटकाई बुम (महान हिमालय)
नागालैण्ड	नागा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी सारामेटी (3826 मीटर) है। इस पर नागालैण्ड की राजधानी कोहिमा (भारत के किसी राज्य की सबसे पूर्वोत्तर राजधानी) स्थित है।
मणिपुर	मणिपुर की पहाड़ी या लैंगटोंग पहाड़ी इस पर लोकटक झील स्थित है। इस झील में भारत का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान केबुल लामजाओ स्थित है।
मिजोरम	लिंगो पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी ब्लू माउंटेन है।
मेघालय	गारो, खासी व जयन्तिया पहाड़ियाँ (ट्रान्सहिमालय पहाड़ी भाग का विस्तार) गारो खासी एवं जयन्तिया पहाड़ी शिलांग के पठार पर अवस्थित है।
असम	लिंगदिंग, नेमजा व अन्य पहाड़ियां NOTE- अन्य पहाड़ी ट्रान्सहिमालय भारत को महान हिमालय से अलग करती है।

हिमालय का प्रादेशिक विभाजन- सिंडली बुरुड ने हिमालय का प्रादेशिक विभाजन (चट्टियों के आधार पर) किया तथा हिमालय को 4 प्रादेशिक भागों में बाँटा।

हिमालय	लम्बाई (किमी.)	चट्टियाँ	विस्तार
पंजाब हिमालय	560	सिन्धु - सतलुज	जम्मू-कश्मीर, लद्दाख व हिमाचल प्रदेश
कुमायूँ हिमालय	320	सतलुज-काली	उत्तराखंड
नेपाल हिमालय	800	काली-तिस्ता	नेपाल, सिक्किम व प. बंगाल
असम हिमालय	750	तिस्ता-ब्रह्मपुत्र	सिक्किम, प. बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, भूटान व चीन

हिमालय के प्रमुख दर्रे

I. पश्चिमी हिमालय के दर्रे :-

काराकोरम :- यह काराकोरम श्रेणी से अवस्थित है, जो उत्तर में स्थित है इसकी ऊँचाई 5000 मी. है और भारत के लद्दाख को चीन के सिंकियांग प्रान्त से मिलाता है।

जम्मू - कश्मीर के दर्रे-

बनिहाल दर्रा -जम्मू से श्रीनगर जाने का सबसे सामान्य मार्ग प्रदान करता है। इस दर्रे में भारत की सबसे लम्बी सुरंग चेनानी नाशिरी सुरंग (9.2 किमी. अवलोकन में लम्बा साल एवारा प्रसाद मुखर्जी व नाशरी सुरंग (2.53मी.) स्थित है।

पीरपंजाल दर्रा- जम्मू से श्रीनगर

जोजिला दर्रा- श्रीनगर से कारगिल

लद्दाख के दर्रे-

फोतुला दर्रा- कारगिल से लेह

चांगलुंगला दर्रा- लेह से दुनिया भर में विश्व का सबसे ऊँचा मोटर योग्य सड़क बताने योग्य दर्रा था (18380 फीट) लेकिन अवलोकन में विश्व का सबसे ऊँचा मोटरसाइकिल चलाने योग्य दर्रा उमलिंगला दर्रा (19300 फीट) है।

चांगला :- यह लद्दाख को तिब्बत से मिलाता है, यह शीत ऋतु में हिमपात के लिए खुला रहता है।

लानक ला :- लद्दाख के चीन अधिकृत अक्साई चीन में स्थित है और तिब्बत की राजधानी तथा लद्दाख के बीच सम्पर्क कराता है।

हिमाचल प्रदेश के दर्रे-

बरालाचा ला :- यह लेह और लेह को आपस में जोड़ता है इसी से मनाली - लेह सड़क गुजरता है। यह शीत ऋतु खुला रहता है

रोहतांग :- यह हिमाचल के लाहौल और स्पीति के बीच में संपर्क कराता है इसी से मनाली - लेह सड़क गुजरता है। इस पर अटल सुरंग (9.02) स्थित है।

शिपकी ला :- हिमाचल प्रदेश को चीन से मिलाता है

ट्रेक्चा दर्रा- मनाली से शिमला



प्रायद्वीपीय पठार का महत्त्व

- पठार के अपक्षय व अपरदन से काली मिट्टी का विकास हुआ है जो कपास के खेती के लिए उपयुक्त होता है।
- पश्चिमी भाग पर अधिक वर्षा वाले सदाबहार उच्च भागों पर लैटेराइट मिट्टी का विकास हुआ है जिस पर घास काँसी सवाना की वृद्धि होती है।
- पश्चिमी भाग पर अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में सदाहरित वन पाए जाते है।
- प्रायद्वीपीय पठार भारत के अधिकांश खनिज संसाधनों की पूर्ति करता है।
- यहाँ की कृषि-आधिक संरचना सोना ताँबा हीरा कोयला मैगनेसिमस आदि खनिजों से आबाद है।
- द्वीप समूह- भारत में सबसे लंबी तट रेखा (Coast line) गुजरात राज्य की है।
  भारतीय सीमा में निम्नलिखित द्वीप समूह शामिल हैं-



द्वीपीय क्षेत्र	
बंगाल की खाड़ी के द्वीप	अरब सागर के द्वीप
अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह	पिरोटन द्वीप
न्यू मूर द्वीप	दीव
सागर द्वीप	अलीबाग
व्हीलर द्वीप (कलाम द्वीप)	अलिमाबेट
श्री हरिकोटा द्वीप	चाडियाबेट
पंबन द्वीप	मुंबई शहर
कच्चातिवु द्वीप	वेलंदे
	कोचरे
	द्वारका
	अटकाप
	सलसेट

श्रीहरिकोटा

- यह आंध्रप्रदेश के तट पर स्थित है।
- इसी द्वीप से भारत का एकमात्र उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र स्थित है।

पंबन द्वीप

- यह तमिलनाडु की खाड़ी में अवस्थित है
- यह आइलैंड ब्रिज अथवा रामसेतु का ही भाग है जो भारत व श्रीलंका के बीच स्थित है
- यहाँ रामेश्वरम् स्थित है।

न्यू मूर द्वीप

- यह बंगाल की खाड़ी में भारत व बांग्लादेश की सीमा पर अवस्थित है जिसके कारण दोनों देशों में अधिकार को लेकर विवाद चलने के कारण क्षेत्र लिया गया।
- भारत के हिस्से में आए भाग का अधिकांश भाग जलमग्न रहता है।

अब्दुल कलाम द्वीप

- यह ओडिशा के तट पर स्थित है।
- इसका प्रमोग भारत अपने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम के परिक्षण के लिए करता है।

अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह

- यह द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित है।
- अंडमान समूह में मध्य अण्डमान (Middle Andaman) सबसे बड़ा है।
- ये द्वीप समूह डेरा के उत्तर-पूर्व में स्थित पर्वत शृंखला का विस्तार है।
- उत्तर अण्डमान में स्थित सैडल पीक (SaddlePeak) सबसे ऊँची (लगभग 737 मीटर) चोटी है।
- निकोबार समूह में ग्रेट निकोबार सबसे बड़ा है।

इंडो ब्रह्म नदी:- भू-वैज्ञानिक मानते हैं कि मायोसीन काल से लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाख वर्ष पहले एक विशाल नदी थी जिसे सिंधुगंगा या इंडो - ब्रह्म नदी कहा गया है।

इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र –

1. पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
2. मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
3. पूर्व में ब्रह्मपुत्र का मैदान व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

सिन्धु नदी तंत्र



यह सिंधु की सबसे बड़ी नदी प्रणालियों में से एक है जिसका क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km है। भारत में इसका क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी है।

- सिन्धु नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. है। परंतु भारत में इसकी लम्बाई केवल 1,114 km है। भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (काराकोरम श्रेणी) में बोचर-चू के सिकट एक ग्लेशियर (हिमनद) से होता है। तिब्बत में इसे शेर मुख अथवा सिंगी खंबाब कहते हैं।
- सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ है।
- अन्य सहायक नदियाँ – जास्कर, लंगांग, सिंगरा, निमोचिक, दमोक, दुंगथ, द्रुकपुंग, द्रुकचू, गारजिंग व द्रुकमर, गोसरा।
- अंततः यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के सिकट पहाड़ियों से बाहर निकलती है। यहाँ इन्हिंदे तट पर काबुल, लोधी, गोमल, विबोआ और संगर नदियाँ इसमें मिलती है।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के सिकट पंचनद का जल प्राप्त करती है। पंचनद व्यास पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया है।

सिन्धु की प्रमुख सहायक नदियाँ :-

1. सतलुज नदी 2. व्यास नदी
3. रावी नदी 4. चिनाब नदी
5. झेलम नदी

सिन्धु नदी तंत्र

सिन्धु जल संधि (1960)

तीन पूर्वी नदियाँ - व्यास, रावी, सतलुज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियाँ सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया –

1. व्यास, रावी, सतलुज	80% पानी भारत
	20% पानी पाकिस्तान
2.सिन्धु, झेलम, चिनाब	80% पानी पाकिस्तान
	20% पानी भारत

सतलज नदी -



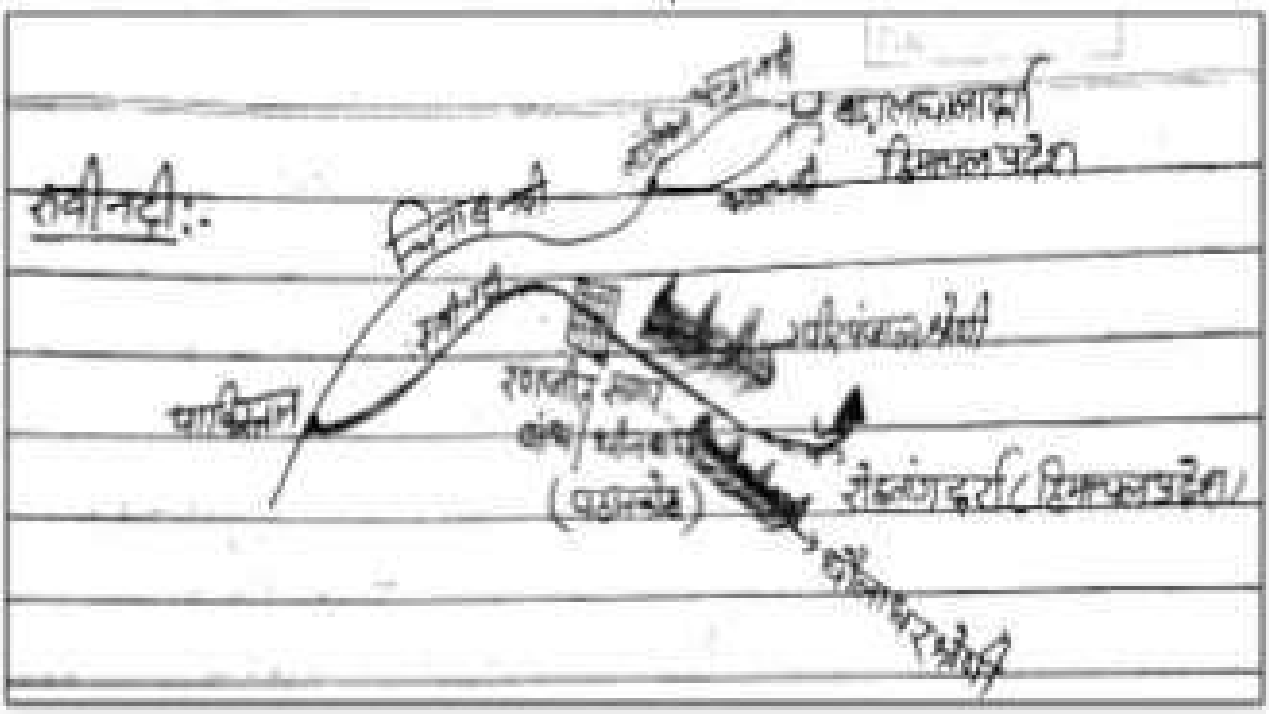
यह एक पूर्ववर्ती नदी है जो तिब्बत में लगभग 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राक्षस ताल झील से निकलती है। यहाँ इसे लॉगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता है।

- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए हंगू - तिब्बत सीमा के लगभग शिपकी ला दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहते हुए अंत में सिन्धु नदी से मिल जाती है।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- सतलुज, सिन्धु नदी की सहायक नदी है।
- इस नदी पर हिमाचल प्रदेश में लगभग झाकड़ी परियोजना तथा भाखड़ा बाँध व इसके पीछे गोविन्द सागर मानसून तथा पंजाब के रोपड़ में लगभग बाँध बना हुआ है।

व्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अल्प महत्वपूर्ण सहायक नदी है। रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड से निकलती है।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती है। तथा धौलाधार श्रेणी से आती और पाराशर से महाचण्ड का विलोप करती है।
- यह पंजाब के मैदान में प्रवेश करती है यहाँ हरिके बैराज के पास सतलुज नदी से आ मिलती है।

रावी नदी (चदरभागी नदी)

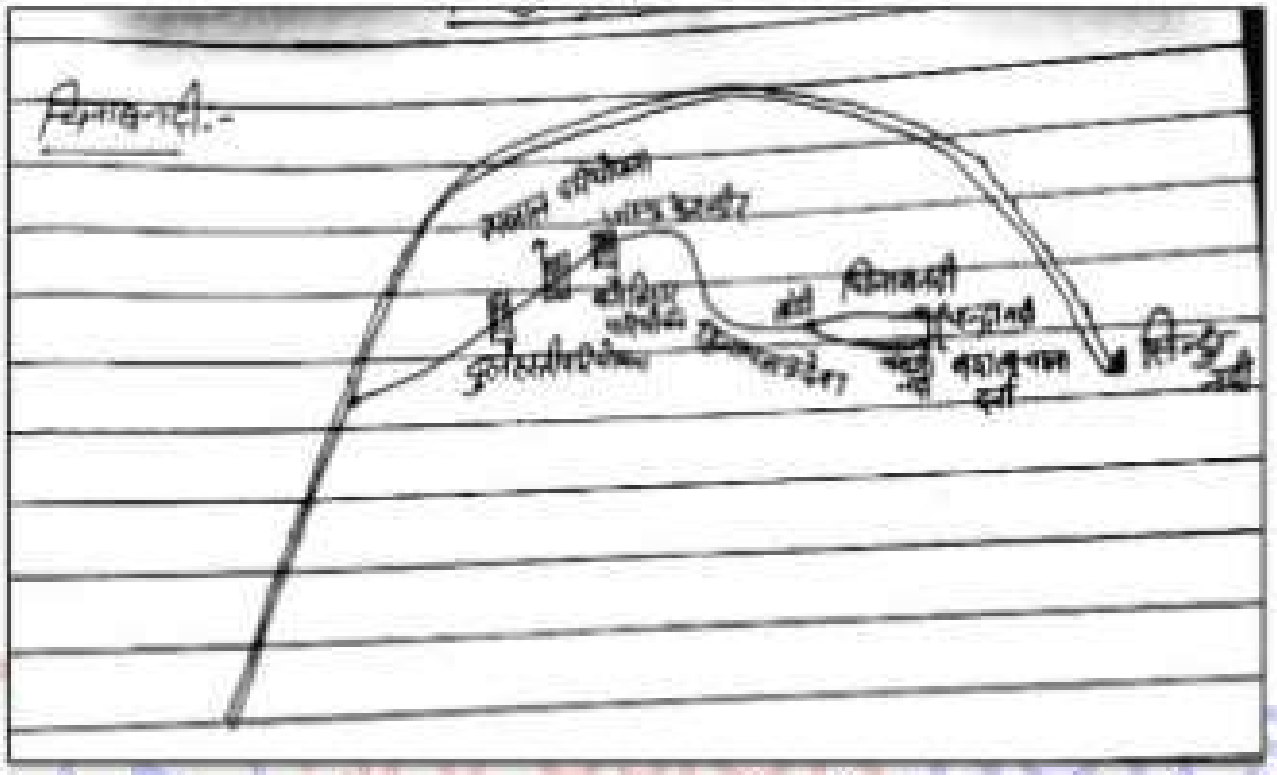


यह नदी सिन्धु की अन्य महत्वपूर्ण सहायक नदी है जो हिमाचल की कुल्लू की पहाड़ियों से स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से निकलती है तथा चंडा घाटी से होकर बहती है।

- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब

- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले ठ सतलज सिन्धु के संगम चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के ब्रह्मिण-पूंछ श्रेणी ठ धौलाधार के श्रेणी से प्रवाहित होती है।
- इस नदी पर चंद्रताल(पंजाब) के निकट मील झील / रमणीक सागर झील बना हुआ है।

चिनाब नदी (अस्किनी)

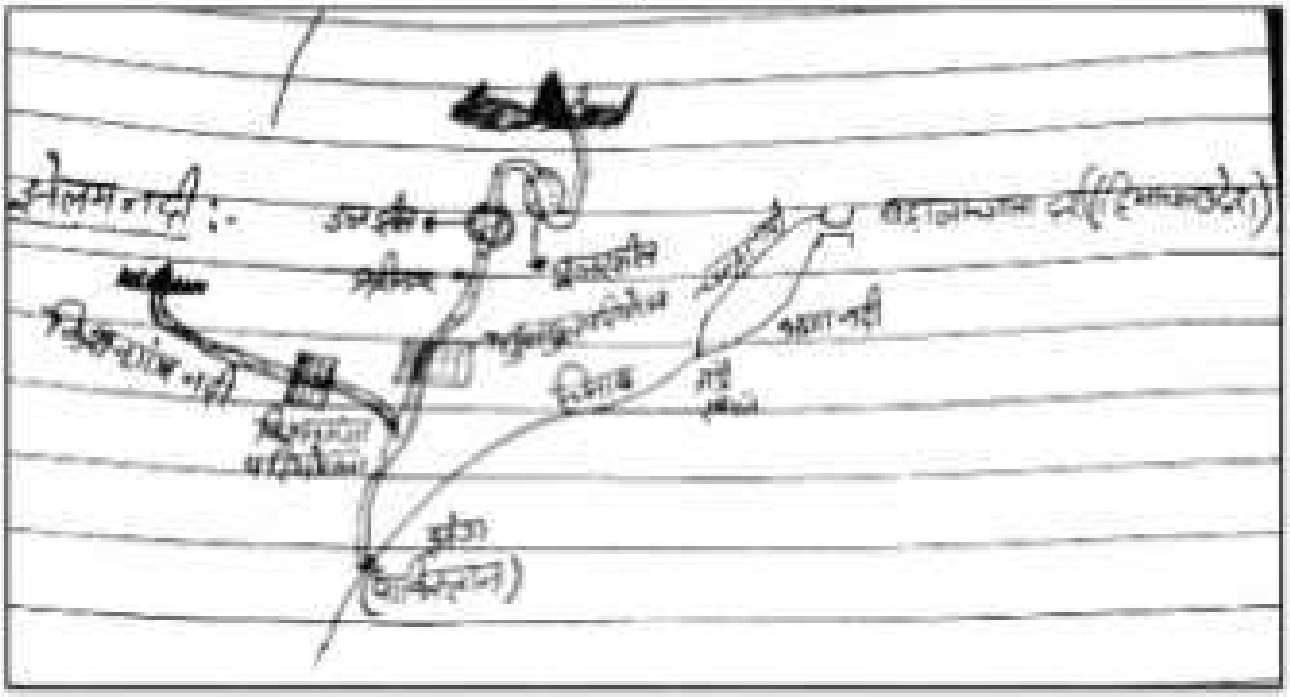


यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

- इसका उद्गम हिमाचल प्रदेश के निकट बड़ालाचला दर्रे से चंद्रा और भागा नामक दो सरिताओं के मिलने से होता है जो सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट ताड़ी में आपस में मिलती है, इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता है।

- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का प्रवाह क्षेत्र 1,180 किमी. है।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर
- इस नदी पर जम्मू कश्मीर में अनंतनाग पारिस्थितिकी, कुलगस्ती पारिस्थितिकी ठ सलाल पारिस्थितिकी का निर्माण किया गया है।

झेलम नदी (वितस्ता)



राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान के भूगोल का अध्ययन करने के लिए हम इसे दो भागों में विभाजित करेंगे-

1. सामान्य परिचय

2. भौतिक स्वरूप

1. सामान्य परिचय -

प्रिय छात्रों, सामान्य परिचय के अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न बिन्दुओं को विस्तार से समझेंगे-

(अ) राजस्थान शब्द का उल्लेख

(ब) राजस्थान की स्थिति

(स) राजस्थान का विस्तार

(द) राजस्थान का आकार

(ह) राजस्थान की आकृति

2. भौतिक स्वरूप -

इसी प्रकार भौतिक स्वरूप के अंतर्गत हम निम्न बिन्दुओं को विस्तार से समझेंगे –

(अ) पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

(ब) अरावली पर्वतीय प्रदेश

(स) पूर्वी मैदानी प्रदेश

(द) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

1. राजस्थान का परिचय

राजस्थान शब्द का अर्थ :- राजाओं का स्थान

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख :-

- *राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विजय संवत 682 ई. में उद्योतन सूरी (जिनोही लिपि) के शिलालेख में मिलता है।*
- *मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक "मुहणोत नैणसी" ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।*
- *महर्षि दयानन्द ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।*
- *जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सन् 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को "राजपूताना" शब्द कहकर पुकारा था। इस तथ्य का उल्लेख जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक "एनिल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" में किया है।*

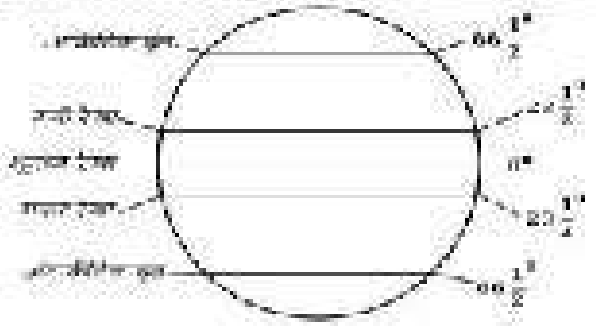
जॉर्ज थॉमस का परिचय :-

- *जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे, जो कि 18 वीं सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे।*
- *इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि सर्वप्रथम एवं पूर्ण आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था, इसलिए इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।*

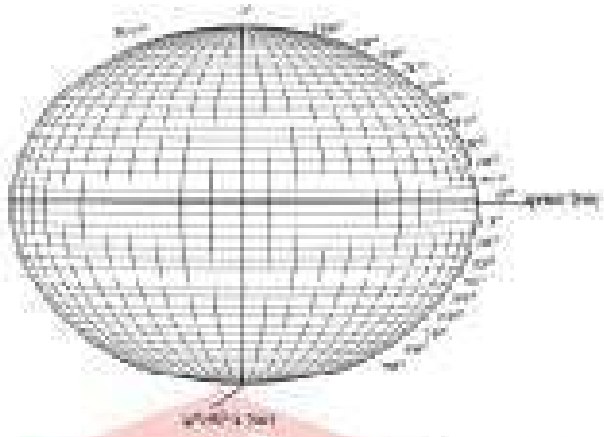
जेम्स टॉड :-

- *जेम्स टॉड राजपूत शासकों का शासन था, इसलिए इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।*
- *जेम्स टॉड एक सैनिक के रूप में 1818 से 1822 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे।*
- *जेम्स टॉड ब्रिटेन के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।*
- *जेम्स टॉड को "राजस्थान के इतिहास का पितामह" कहा जाता है।*
- *जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नाम से भी जानते हैं।*
- *इस पुस्तक का गहराई से हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर –हीराचंद ओझा" ने किया था इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का शिलालेख" कहते हैं।*
- *जेम्स टॉड सर्वेक्षण के सिलसिले में अजमेर और उदयपुर में कई जगह पर रहे थे- उसमें भीम नामक कस्बे में छोटा सा गाँव डोरसमुद्रा भी था- जो जंगलों और अरावली-पहाड़ों से घिरा हुआ है।*
- *उन्हें यह जगह पसंद आई तो उदयपुर के महाराणा भीम सिंह की सहमति से स्वयं के लिए डोरसमुद्रा में एक छोटा सा किराये अवास लिया।*
- *महाराणा भीम सिंह से जेम्स टॉड की सेवाओं से प्रभावित होकर गाँव का नाम टॉडगढ़ रख दिया, जो कालान्तर में टाडगढ़ कहलाने लगा। टाडगढ़ आज अजमेर जिले की एक तहसील का मुख्यालय है।*
- *जेम्स टॉड के किले से प्रतिदिन में सरकारी स्कूल चलता है।*

(ब) राजस्थान की स्थिति:- प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।



मानचित्र - 1



मानचित्र - 2

नोट - भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है जो पृथ्वी को दो गोलार्द्धों उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है

इस रेखा पर प्रातः छह बजे दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है

विषुवत रेखा के उत्तर में कर्क रेखा है व दक्षिण में मकर रेखा है

नोट- पृथ्वी का गलोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर - दक्षिण तथा पूर्व - पश्चिम" में विभाजित किया गया है। इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते हैं

अक्षांश रेखाएँ - यह रेखाएं ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर खींची हुई है, अर्थात् भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते हैं

भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है (देखें मानचित्र-1)

ग्लोब पर कुल अक्षांशों की संख्या (90° उत्तरी गोलार्द्ध में और 90° दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180° है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181° होती है

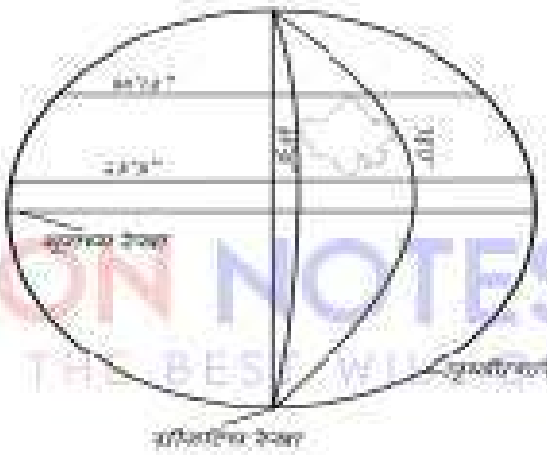
देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360° रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है।

पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली और उत्तर - दक्षिण दिशा में खींची गयी काल्पनिक रेखाओं को याम्योत्तर, देशान्तर, मध्यान्तर रेखाएं कहते हैं।

- ग्रीनविच (यहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है) से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस याम्योत्तर को प्रमुख याम्योत्तर कहते हैं।
- इनका मान देशांतर है तथा यहाँ से हम 180° तिब्बी पूर्व या 180° तिब्बी पश्चिम तक गणना करते हैं

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक "भारत एवं विश्व का भूगोल पढ़ें"।

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°03" से 30°12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जिसका अंतर 7°09 मिनट है, जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है जिसका अंतर 8°47 मिनट है (देखें मानचित्र A, B)



(मानचित्र-A)

नोट- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार 7°9"(30°12" - 23°03") है तथा कुल देशांतरीय विस्तार 8°47" (78°17" - 69°30") है।

1° = 4 मिनट

1" =111.4 किलोमीटर होता है।

- राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है
- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है।

प्रश्न. । भारत के कुल भू – भाग का कितना प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान में है।

(A) 10.4 प्रतिशत (B) 7.9 प्रतिशत
(c) 13.3 प्रतिशत (b) 11.4 प्रतिशत (A)

- यह हिमाच्छादित हिमालय की ऊंचाइयों से शुरू होकर दक्षिण के विशुवतीय वर्षा वनों तक फैला हुआ है। यह संपूर्ण विश्व का 2.42% है
- 1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था, लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ के अलग होने के बाद भारत का सबसे बड़ा राज्य (क्षेत्रफल की दृष्टि से) राजस्थान बन गया।

2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,548,437 थी जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है

- कर्क रेखा राजस्थान में स्थित:-



कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है:-

1. गुजरात 2. राजस्थान 3. मध्यप्रदेश 4. छत्तीसगढ़ 5. झारखंड 6. पश्चिम बंगाल 7. त्रिपुरा 8. मिजोरम

राजस्थान में कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिले के लगभग से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है इनके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।

राजस्थान से कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है

राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है

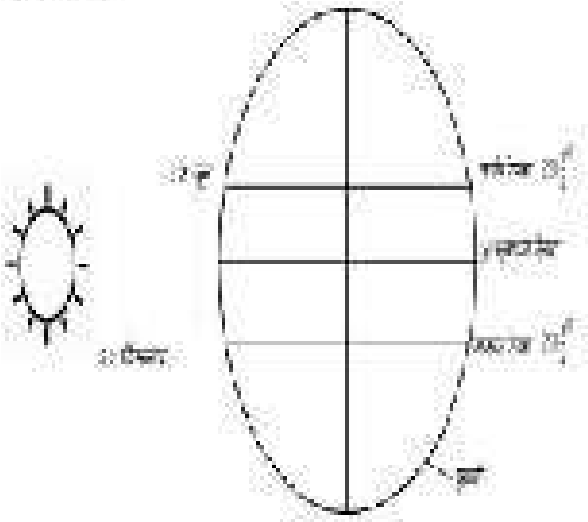
राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक समीपवर्ती शहर बाँसवाड़ा है

धूपदिन रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है अतः यहाँ पर तापमान अधिक होता है जैसे - जैसे धूपदिन रेखा से दूरी बढ़ती जाती है, वैसे - वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है

राजस्थान में बाँसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण - बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए लेकिन वास्तव में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरू है यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है। इसका कारण यहाँ चलने वाली रेत का विस्तार है।



चित्र:- मानचित्र को ध्यान से समझिए

नोट - ऐसे कि जबकि दिए गए मानचित्र में दर्शाया है कि सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है।

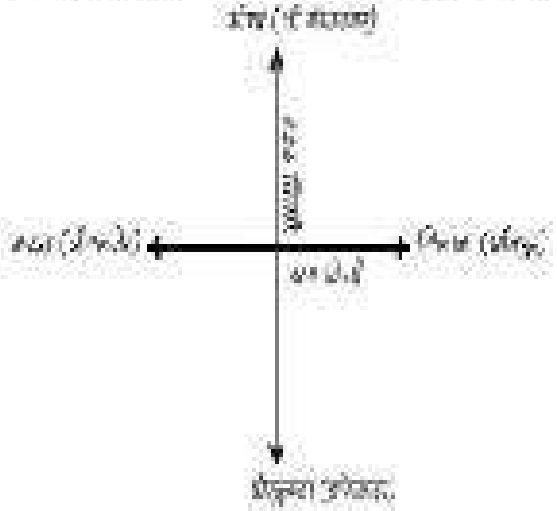
- इसके अलावा सूर्य 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई से दिसंबर तक जैसे -जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे - वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी से जून तक जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे - वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है।अर्थात् सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पड़ती है इस क्षेत्र को उपसकटिबंधीय क्षेत्र कहते है। यहाँ पर सूर्य की किरणें का पहुंचने के कारण यहाँ वर्ष भर अच्छी वर्षा होती है।

पूर्वी क्षेत्रांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जबकि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है

विस्तार:-

राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर से

श्रीगंगानगर जिले के अंतिम गाँव से दक्षिण में श्रीकरणपुर



जिले की कुलदीपगढ़ तहसील के दोरूखेड़ा गाँव तक है इसी प्रकार पूर्व से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा जिसकर पूर्व में धौलपुर जिले के सरमथुरा की ढाणी, जिसका गाँव रामगढ़ा तहसील से पश्चिम में बाड़मेर जिले के कटरा गाँव (सत्त-तहसील) तक है

आकृति

जिसे ज्यामितीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है इसके संस्थापक सर सिरिल एस रेडक्लिफ को माना जाता है
- रेडक्लिफ रेखा 17 अगस्त 1947 को भारत विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा तय गई।
- इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है



रेडक्लिफ रेखा पर भारत के तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश स्थित है।

1. पंजाब (547 कि.मी.)
2. राजस्थान (1070 कि.मी.)
3. गुजरात (512 कि.मी.)
4. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी.)
5. लेह-लद्दाख

- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की सर्वाधिक सीमा - (1070 कि.मी.)
- रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)

राजस्थान के 2 ऐसे जिले हैं जिनकी अंतर्राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है –

1. श्रीगंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब)
2. बाड़मेर (पाकिस्तान + गुजरात)

राजस्थान के 4 जिले ऐसे हैं जिनकी सीमा दो – दो राज्यों से लगती है-

- शेखावाटी :- पंजाब + हरियाणा
- धौलपुर :- उत्तरप्रदेश + मध्यप्रदेश
- डूँगरपुर :- मध्यप्रदेश + गुजरात
- डीग :- उत्तरप्रदेश + हरियाणा



राजस्थान की पाकिस्तान के साथ सीमा

❖ महत्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता है – भरतपुर
2. लड्डा के पेड़ पाये जाते हैं – उदयपुर व चित्तौड़गढ़
3. राजस्थान में इण्डस्ट्रीयल अकाल किस वर्ष पड़ा – 1956 वि.सं.
4. राजस्थान में सामान्य वर्षा किस दिशा से बढ़ती है – ट्रांसिग – पश्चिम से उत्तर – पूर्व में
   नोट :- लेकिन राजस्थान में उत्तर – पश्चिम से ट्रांसिग - पूर्व की ओर वर्षा की मात्रा में वृद्धि होती है
5. राजस्थान में गुरु शिखर चोटी की ऊँचाई कितनी है - 1722 मीटर
6. राजस्थान में किस शहर को सन सिटी के नाम से जाना जाता है – जोधपुर को
7. राजस्थान की आकृति है – त्रिभुज कोण चतुर्भुज
8. राजस्थान के किस जिले का क्षेत्रफल सबसे ज्यादा है – जैसलमेर
9. राज्य की कुल अंतर्राष्ट्रीय सीमा की लम्बाई है - 5920 किमी
10. राजस्थान का सबसे पूर्वी जिला है – धौलपुर
11. राजस्थान का सामान्यतः अंतिम सप्ताह वृष्टि अनुपलब्ध है – रोहिड़ा
12. राजस्थान के किस क्षेत्र में सामान्यतः एक फसल पाई जाती है – ट्रांसिग
13. नूह साइ से सूर्य किस जिले से उदय/ अस्त होता है – डूँगरपुर
14. राजस्थान में पूर्ण सम्प्रदेश वाले जिले हैं- जैसलमेर, बाड़मेर
15. राजस्थान के अंतिम से आगे में सर्वाधिक वर्षा होती है – ट्रांसिग – पूर्वी
16. राजस्थान में सर्वाधिक तहसीलों की संख्या किस जिले में है – जयपुर
17. राजस्थान में सर्वाधिक भूमिगत किस जिले में होता है – धौलपुर
18. ताड़ीना पठार किस जिले में स्थित है – सिरोही
19. राजस्थान में किस प्रकार का आकाश है – शुष्कधारी प्रकार
20. राजस्थान के क्षेत्रफल का कितना भू-भाग रेगिस्तानी है – लगभग दो-तिहाई
21. राजस्थान के पश्चिम भाग में पाए जाने वाला सर्वाधिक विशेषता सर्प – पीवणा सर्प
22. राजस्थान के पूर्णतया अवनलिका रहित क्षेत्र - सवाईमाधोपुर (जैसलमेर)
23. राजस्थान के किस जिले में सूर्य किरणों का तिरछापन सर्वाधिक होता है –श्रीगंगानगर
24. राजस्थान का क्षेत्रफल इलाहाबाद से कितना गुना है - 17 गुना बड़ा है

25. राजस्थान की 1070 किमी. लम्बी पाकिस्तान से लगी सीमा रेखा का नाम – रेडक्लिफ रेखा
26. कौन रेखा राजस्थान के किस जिले से छूती हुई गुजरती है – हनुमानगढ़ व बाँसवाड़ा को
27. राजस्थान में क्षेत्रफलकी दृष्टि से सबसे बड़ा जिला – जैसलमेर
28. भारत के रेगिस्तान के कुल क्षेत्रफल का कितना प्रतिशत राजस्थान में है – 58 प्रतिशत
29. राजस्थान के रेगिस्तान में रेत के विशाल स्तूपाकार टीले को क्या कहते हैं – धोरे
30. राजस्थान का एकमात्र नेशनल पार्क सिरिस है – अलवर गाँव (सरिस्कानेशनल)

राजस्थान की अन्य राज्यों से सीमा

राजस्थान के साथ मिले राज्यों की सीमा लगती है उन राज्यों के नाम :-

शॉर्ट ट्रिक :- "प हरि उत्तर में गुल गयो"

सूत्र		राज्य
प	-	पंजाब
हरि	-	हरियाणा
उत्तर	-	उत्तर प्रदेश
में	-	मध्य प्रदेश
गु	-	गुजरात

पंजाब (89 किमी.)

- राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिले फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती है।
- पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है।
- पंजाब सीमा के समवर्ती जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।
- पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला हनुमानगढ़ व छोटा श्रीगंगानगर जिला है।

शॉर्ट ट्रिक

पंजाब की सीमा से सटे राजस्थान राज्य के जिले है।

"श्री हनुमान"

सूत्र		जिला
श्री	-	श्रीगंगानगर
हनुमान	-	हनुमानगढ़

हरियाणा (1262 किमी.)



- राजस्थान के 8 जिलों (श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, झुंझुनू, कोटपूतली-बहरोड़, दौसा और भरतपुर) की सीमा हरियाणा के 7 जिलों (सिरसा, फतेहाबाद, हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, नूंह) से लगती है।
- हरियाणा सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर है।
- हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा हनुमानगढ़ व न्यूनतम सीमा अलवर की लगती है तथा सीमा के समवर्ती जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।
- नूंह (मेव) नया जिलेनिर्माण जिला है जो राजस्थान के अलवर जिले को छूता है।

- इस जिले में 8 तहसील (डीडवाना, नांवासपट्ट, छोटी खाटू, लाडनूं, परबतसर, मकराना, नावां, कुचामनसिटी) हैं।

डीग –

- भरतपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीग गठित किया गया है।
- इस जिले में 9 तहसील (डीग, पहाड़ा, कुम्हेर, रायह, नगर, सीकरी, कामां, डुडहेरा, वहजाई) हैं।

पालौंदी :

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला पालौंदी गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (पालौंदी, लोहावट, आऊ, शेषू सेंदराव, आऊ, भटिमालाणी, डागिणी) हैं।

जोधपुर (ग्रामीण)

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर जोधपुर (ग्रामीण) जिला गठित किया जाता है।
- जोधपुर (ग्रामीण) जिले में 15 तहसील (जोधपुर उत्तर तहसील (जोधपुर का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र को छोड़कर शेष समस्त क्षेत्र), जोधपुर दक्षिण तहसील (जोधपुर का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र को छोड़कर शेष समस्त क्षेत्र) बुड़ी अक्षानपली, पूर्णी, ढ़ांवर, शिवाड़, शेरगढ़, भोपालगढ़, बोपाड़सिटी, ओसियां, लिचरी, आउवी, शेरगढ़, आलेसर, सेवदरा व चामू) हैं।

जोधपुर :

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर जोधपुर जिला गठित किया गया है।
- इस जिले में 2 तहसील जोधपुर उत्तर (जोधपुर तहसील का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाला समस्त क्षेत्र), जोधपुर दक्षिण (जोधपुर तहसील का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाला समस्त क्षेत्र) हैं।

गंगापुरसिटी –

- जिला मुख्यालय – गंगापुरसिटी
- सवाईमाधोपुर एवं करौली जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला गंगापुरसिटी गठित किया गया है।
- इस जिले में 7 तहसील (गंगापुरसिटी, तलवाड़ा, हर्षी-पुर, झाझपुरा, बरवाना, टोडाभीम, लाढ़ोली हैं।
- टोडाभीम और लाढ़ोली तहसील को करौली से तोड़ा गया है। अन्य सभी को सवाईमाधोपुर से तोड़ा गया है।

डूडू –

- जिला मुख्यालय - डूडू
- जयपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डूडू गठित किया गया।
- इस जिले में 3 तहसील (लालसागर, डूडू खानी) हैं।

जयपुर (ग्रामीण)

जिला मुख्यालय - जयपुर

जयपुर जिले का पुनर्गठन कर जयपुर (ग्रामीण) जिला गठित किया गया है।

जयपुर ग्रामीण जिले में 18 तहसील (जयपुर तहसील (जयपुर का नगर निगम जयपुर (ईस्टर्न) एवं नगर निगम जयपुर (वेस्टर्न) के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र को छोड़कर शेष समस्त क्षेत्र) तहसील आमेर का नगर निगम जयपुर (वेस्टर्न) के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र को छोड़कर शेष समस्त क्षेत्र, तहसील सांगानेर का नगर निगम जयपुर (वेस्टर्न) के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र को छोड़कर शेष समस्त क्षेत्र, तहसील आमेर का नगर निगम जयपुर (ईस्टर्न) के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र को छोड़कर शेष समस्त क्षेत्र, मालपुरा, अनन्तपुरा, दूदू, झाबकपुरा, कोटपाखड़ा, मनसागरगढ़, आंधी, चांदपुरा, पुरोहित (दूदू–लालसागर), माधोराजपुरा, रामपुरा डाबड़ी, किशनगढ़ बेलवाल, जोबनेर, शाहपुरा) हैं।

जयपुर –

जिला मुख्यालय – जयपुर

जयपुर जिले का पुनर्गठन कर जयपुर जिला गठित किया गया है।

जयपुर जिले में 4 तहसील (जयपुर तहसील का नगर निगम जयपुर (ईस्टर्न) एवं नगर निगम जयपुर (वेस्टर्न) के अन्तर्गत आने वाला समस्त क्षेत्र, तहसील कोटपाड़ा का नगर निगम जयपुर (वेस्टर्न) के अन्तर्गत आने वाला समस्त क्षेत्र, तहसील आमेर का नगर निगम जयपुर (ईस्टर्न) के अन्तर्गत आने वाला समस्त क्षेत्र, तहसील सांगानेर का नगर निगम जयपुर (वेस्टर्न) के अन्तर्गत आने वाला समस्त क्षेत्र) हैं।

कोटपूतली-बहरोड़ –

- जिला मुख्यालय – कोटपूतली-बहरोड़
- जयपुर एवं अलवर जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला कोटपूतली- बहरोड़ गठित किया गया है
- कोटपूतली – बहरोड़ जिले में 8 तहसील (बहरोड़, बानसूर, नीमराना, मांढण, लक्ष्मणपुर कोटपूतली, शिवदासपुर, पाटन) हैं। कोटपूतली, शिवदासपुर, पाटन को जयपुर से तोड़ा गया है, अन्य सभी को अलवर से तोड़ा गया है।

चौमूंहला-तिजारा –

- जिला मुख्यालय – चौमूंहला
- अलवर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला चौमूंहला तिजारा गठित किया गया है।
- नवगठित चौमूंहला-तिजारा जिले में 7 तहसील (तिजारा, किशनगढ़बास, चौमूंहला, कोटकासिम, इतलोदी, टपूकड़ा, तुंगावर) हैं।

नीम का थाना :–

- जिला मुख्यालय – नीम का थाना में
- सीकर और झुंझुनूं जिलों का पुनर्गठन कर के नीमकाथाना का गठन किया गया है।
- इस नवगठित जिले के तहत 4 उपखंड (नीम का थाना, श्रीमाधोपुर, दातारामगढ़ और चेलासी) शामिल किए गए हैं।

- इसमें सीकरधाणा और श्री माधोपुर को सीकर जिले से तथा उदयपुरवाटी और चेनड़ी को झुंझुनू जिले से शामिल किया गया है।

बसवाड़ा :-

- जिला मुख्यालय - बसवाड़
- जयसमंद घाटी, राजसमंद और भीलवाड़ा जिलों का पुनर्गठित करके तथा जिला बसवाड़ नाटिन किया गया है।
- इस नए गठित बसवाड़ जिले में 6 उपखंड (बसवाड़, टाटगढ़, नैनारण, रामपुर, सलुंबा और छिपलांगे) शामिल किए गए हैं।

केकड़ी :-

जिला मुख्यालय - केकड़ी

अजमेर और टोंक जिले को पुनर्गठित करके तथा जिला केकड़ी बनाया गया है।

केकड़ी जिले में 5 उपखंड शामिल किए गए हैं। इसमें केकड़ी, सावर, पिसांगन, सरवाड़ और टोडारायसिंह शामिल है।

सलूम्बर :-

जिला मुख्यालय - सलूम्बर

उदयपुर जिले का पुनर्गठित करके नए जिले सलूम्बर का गठन किया गया है।

सलूंबर जिले में 4 उपखंड (लसाड़ा, सेमारी, खमनोरिया और सलूम्बर) शामिल किए गए हैं।

शाहपुरा :-

जिला मुख्यालय - शाहपुरा

भीलवाड़ा जिले का पुनर्गठित करके तथा जिला शाहपुरा बनाया गया है।

शाहपुरा जिले में 6 उपखंड (शाहपुरा, जहाजपुर, पुरानियाकलां, हमेड़ा और कोटड़ी) शामिल किए गए हैं।

सांचौर :-

जिला मुख्यालय - सांचौर

जालौर जिले का पुनर्गठित करके नए जिले सांचौर का गठन किया गया है।

सांचौर जिले में 4 उपखंड (सांचौर, भीनमाल, चितलवाना और रानीवाड़ा) शामिल किए गए हैं।

राजस्थान के संभाग

30 अप्रैल 1949 को राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरुआत हुई थी।

शुरुआत में राजस्थान में 5 संभाग (जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर) थे।

24 अप्रैल 1962 को संभागीय व्यवस्था को तत्कालीन मुख्यमंत्री सुखाड़िया ने बंद कर दिया।

संभागीय व्यवस्था की पुनः शुरुआत 26 जनवरी 1987 को तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने की तथा अजमेर को जयपुर से अलग कर छठा संभाग बनाया।

4 जुलाई 2005 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने भरतपुर को सातवाँ संभाग बनाया।

7 अगस्त 2023 को राजपुताना अजमेरी की सिफारिश पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा सीकर, पाली और डूंगरपुर 3 नये संभाग व 19 नये जिले बनाये गये।

3 संगठित व 7 पुराने संभागों को मिलाकर राजस्थान में कुल 10 संभाग हो गये हैं।

राजस्थान में संभागीय व्यवस्था



कोटा	सिल्क का तीसरा स्थान, राजस्थान का लाडपुरा, औद्योगिक बस्ती, राजस्थान का आलूपुर, उद्यानों का शहर
डूंगरपुर	पहाड़ों की बस्ती
उदयपुर	लेदराइट, ग्रानाइट, लेटराइट, झीलों की बस्ती, चूने का डोलोमाइट सीमेन्ट का स्वर्ग, सावटेल और पावटेल का शहर, दरीमा का खिटखा, लेक सिटी, मिक्स बस्ती, अमेरिकेनिया जैसी आकृति

राजस्थान के प्राचीन क्षेत्र और घटनास्थल स्थिति

गोंडवाना प्रदेश	अनूपगढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़
अटलांटा	हनुमानगढ़
अरावली प्रदेश	झुंझुनूं, सीकर, पुष्कर, लोसलमांसा
कुरुक्षेत्र, शांतनु नखलाऊ, आलोर	अलवर
लेदराइट क्षेत्र / लवण प्रदेश	चौरासी-तिमारा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, भरतपुर, डीग
डोलोमाइट	झालावाड़ (भरतपुर)
कोटा	धौलपुर
गोपालपालपाल	करौली
डांग क्षेत्र, बाँहड़	करौली, सवाईमाधोपुर
प्राचीन काल का टाटा नगर, लड़ाकों का शहर	टोंक
एमहर्स्ट प्रदेश, हाड़ौती प्रदेश	कोटा, बूंदी, झालावाड़, बारां
कृष्णनगर, चम्बलखाड़ा	झालावाड़
लवण प्रदेश	झालावाड़, प्रतापगढ़
डायर्ट	डूंगरपुर आँसवाड़ा का दक्षिणी भाग
लेदराइट	आँसवाड़ा व डूंगरपुर के लाल का भू-भाग
सिरोही नखलाऊ	सिरोही
देवलगढ़ी, चन्द्रावती, आबूरोड	सिरोही
औलाइट, ग्रानाइट, लवणपानी	ग्रानाइट
नवलगढ़ा, नवलगढ़ीपुर	चारासू
लवण प्रदेश, लवण डूंगरपुर	बाँसवाड़ा
लवण प्रदेश	डीग्गाकोट

मरुधर क्षेत्र	चुरू, हनुमानगढ़, डीग्गाकोट, और गंगानगर (घग्घर की सीमा रेखा नहीं मिलती है के आस-पास का क्षेत्र)
रामू नाट की द्रोणी	गंगानगर
नाट विभाजक	भरतपुर, धौलपुर
लवण संघ / हनुमानेल	कोटपूतली-बहरोड़, डीग, अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर
अर्धचन्द्राकार	डीग, अलवर, भरतपुर
डायर्ट प्रदेश	झुंझुनूं, सीकर, लोसलमांसा, डीडवाना-कुचामन, डायर्ट
लवणपट्टी	डीग्गाकोट
पुष्कर	अनूपगढ़
लवणीय प्रदेश की राजधानी / अरिष्टपुर	डायर्ट
लवणनिक्षेप	डीग्गाकोट, पचपदरा, सोधपुर साल्ट, डीडवाना, सॉल्टलेक, आइलेट
लवणाड़ / लवणपुर	सोधपुर
रामगढ़ा	डूगरिया
लवणपुर	सांडेर
नोहड़ / लवणपुर	सांचौर
गोडवाड़	सांचौर, भालोर, डीग्गाकोट, सिरोही
उमरलाल	छितोलिया (डीग्गाकोट) बैसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़)
कांठल	प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा
सर्प द्रोणी का शहर	बाँसवाड़ा
लोहाघाटी	सीकर-झुंझुनूं क्षेत्र से अरावली पर्वत का अवशेष क्षेत्र
कोलट क्षेत्र	डूंगरपुर, पूर्वी सिरोही, उदयपुर जिले का अरावली पर्वतीय आदिवासी क्षेत्र
गुर्वनाला	सोधपुर जिले का दक्षिणी भाग (सांडेर)
आडावाल	अरावली
मेवाड़ा	अजमेर व राजसमंद जिले का दक्षिण क्षेत्र
लवण प्रदेश	अलवर का क्षेत्र

(ब) राजस्थान में मीठे पानी की झीलें –

राजस्थान में मीठे पानी की झीलें



शॉर्ट ट्रिक

राजस्थान की मीठे पानी की झीलों के लिए:-

"जमराज अजा लखीसि कोका पतेह अर"

सूत्र		झीलें
जम	–	जयसमन्द झील
राज	–	राजसमन्द झील
अजा	–	अजमेर झील
ल	–	लखी झील
डी	–	डीडवाना झील
सि	–	सिरिसेढ़ झील
को	–	कोलायत झील
का	–	कायलाना झील
पतेह	–	पतेहसागर झील

विस्तृत वर्णन

- **पुष्कर झील –**
- राजस्थान राज्य के अजमेर जिले के पुष्कर नामक स्थान पर (अजमेर शहर से 11 किमी. दूरी) स्थित पुष्कर झील एक प्रसिद्ध झील है।
- ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा करवाया गया था इसलिए इस झील का नाम 'पुष्कर झील' पड़ा, लेकिन भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार इस झील का निर्माण ज्वालामुखी से हुआ है इसलिए इसे क्रेटर झील भी कहा जाता है।
- यह राजस्थान की प्राचीन, प्राकृतिक एवं सबसे पवित्र झील है।
- इस झील के किनारे प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माजी मंदिर में मूर्ति आद्यगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी। इस मंदिर का निर्माण इसकी सही में पंडित गोकुल चंद पारीक ने करवाया था। (नोट :- राजस्थान के बाड़मेर जिले में आसोतरा नामक स्थान पर एक अन्य ब्रह्माजी का मंदिर है।)
- इस झील को अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे – कोकण तीर्थ, तीर्थ स्थलों का नाना 52 घाट मंदिरों की नगरी, प्रयागराज का गुरु, हिन्दुओं का पांचवा तीर्थ स्थल इत्यादि।
- इस झील के किनारे कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेला लगता है। यह मेला राजस्थान का सबसे बड़ा पशुओं का मेला है जो प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को शिवरात्रि मेले के रूप में आयोजित किया जाता है। यह मेला राजस्थान में आय की दृष्टि से सबसे बड़ा मेला है।
- महाभारत के बाद पांडवों ने यहाँ यज्ञ किया था तथा कौरव व पांडवों का मिलन भी इसी झील के तट पर हुआ था।
- प्राचीन काल में दिधीचिस ने इसी झील के किनारे तपस्या की थी।

- वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना एवं वेदों का संहिताकरण इसी झील के किनारे किया था।
- रामायण राम ने अपने पिता दशरथ का पिंडदान इसी झील में किया था।
- पुष्कर झील में कुल 52 घाट हैं इनमिट इसे काशा घाटा के नाम से भी जाना जाता है इनमें एक सरिता घाट भी है जो सरिताओं के स्नान के लिए बनवाया गया था जिसका निर्माण 1911 ई. में सेठ सरी के द्वारा करवाया गया था। इस घाट को गांधी घाट के नाम से जाना जाता है।
- इस झील के तट पर प्रसिद्ध ब्रह्मा मंदिर है जिसका निर्माण आनाजी (अर्णोराज) के द्वारा करवाया गया था।
- इसी झील के तट पर ट्रावेंट शैली से निर्मित रंगनाथ रंगनाथ जी मंदिर है।
- इसी झील के समीप रक्षानिधी पर्वत पर सावित्री मंदिर भी स्थित है।
- कालिदास ने अपने ग्रंथ "अभिज्ञान शाकुंतलम्" की रचना इसी झील के तट पर की थी।
- महात्मा गांधी की अस्थियां इसी झील में प्रवाहित की गई थी इसलिए इस झील को "गांधी घाट" के नाम से भी जाना जाता है।
- इसी झील के समीप आलेर के नाजाकिए प्रथम द्वारा निर्मित नाजा पैलेस है वर्तमान में यहाँ नाजा पैलेस होटल का संचालन किया जा रहा है।
- इस झील के आस-पास छोटे-बड़े लगभग 400 मंदिर स्थित हैं इस कारण पुष्कर झील को मंदिरों की नगरी" भी कहा जाता है।
- इस झील को सर्वाधिक हानि पहुंचाने वाला मुगल बादशाह औरंगजेब था।
- सन् 1705 ईस्वी में गुरु गोविंद सिंह इस झील के किनारे गुरु गोविंद साहब का पाठ किया था तथा सन् 1809 में इस झील का पुनर्निर्माण मराठों के द्वारा करवाया गया था।
- 1997-98 ई. में अजाडा के सहयोग से यहाँ सफाई कार्य करवाया गया।
- पुष्कर के पंचकुण्ड को "मुक्तिधन" घोषित किया गया है।

जयसमंद झील -

- राज्य के सलूम्बर जिले में स्थित जयसमंद झील को ढेबर झील के नाम से भी जाना जाता है।
- इस झील का निर्माण गोमती नदी, झामरी नदी तथा बनार नदी का पानी रोक कर मेवाड़ के राणा जयसिंह के द्वारा 1685 - 91 में करवाया गया था।
- यह झील एशिया की दूसरी तथा राजस्थान की प्रथम मीठे पानी की सबसे बड़ी, कृत्रिम झील है।
- इस झील पर छोटे-बड़े कुल 7 टापू स्थित हैं जिस पर भील तथा मीणा जनजाति के लोग निवास करते हैं इनमें से सबसे बड़ा टापू "बाबा का आंगड़ा" है जबकि सबसे छोटा टापू "प्यारी" है।
- इस झील के एक टापू का नाम "बाबा का मगरा" भी है जिस पर वर्तमान में एक होटल संचालित किया जा रहा है इस होटल का नाम आइलण्डर रिसोर्ट है।
- इस झील से सिंचाई के लिए दो नहरे निकलती हैं - इनमें से एक का नाम श्यामपुरा और दूसरी भाट है इन दोनों नहरों की कुल लंबाई 324 किलो मीटर है।
- इस झील की लंबाई 15 किलो मीटर तथा चौड़ाई अधिकतम 8 किलोमीटर है।
- इस झील में 6 अपतालक छतरियां एवं प्रसाद बने हुए हैं।
- जयसमंद झील से उदयपुर जिले को पीने के पानी की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है।
- इस झील के तट पर नर्मदेश्वर शिवालय, चित्रित हवा महल तथा रानी का महल स्थित है।

- राजसमंद झील -
- राजसमन्द जिले में स्थित इस झील का निर्माण मेवाड़ के राणा राजसिंह के द्वारा गोमती नदी का पानी रोक कर सन् 1662 से 1680 के बीच में करवाया गया था। इस झील की कुल लंबाई लगभग 6.5 किलोमीटर तथा चौड़ाई लगभग 3 किलोमीटर है।
- यह राज्य में एकमात्र ऐसी झील है जिसका वास्तविक विस्तार जिले के नाम पर हुआ है।
- राजसमंद झील राज्य की दूसरी सबसे बड़ी मीठे पानी की कृत्रिम झील है।
- राजसमंद झील के तट पर एशिया की सबसे बड़ी प्रशस्ति "राज प्रशस्ति" 25 बड़े शिलालेखों पर उत्कीर्ण है। राज प्रशस्ति की रचना राजा "राजसिंह" के दरबारी कवि रणछोड़भट्ट तैलंग के द्वारा की गई थी। संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण इस प्रशस्ति पर 1917 श्लोक उत्कीर्ण है।
- राजसमंद झील के तट पर प्रसिद्ध द्वारकाधीश का मंदिर है यहाँ पर उदयपुर संग्रहालय की पीठ भी स्थित है। यहाँ पर एक प्रसिद्ध त्यौहार मनाया जाता है जिसको "अन्नकूट महोत्सव" के नाम से जानते हैं।
- राजसमंद झील के तट पर "छिंता पति के सती होने वाली पेथड़ माता का मंदिर" स्थित है।
- इस झील को एक अन्य नाम "राजसमुद्र" के नाम से भी जानते हैं।
- इस झील को राज्य सरकार ने आर्थिक दृष्टि से पुष्कर की तरह पवित्र घोषित किया है अर्थात् राज्य सरकार ने इस झील को सबसे पवित्र झील घोषित किया है।
- पिछोला झील - राज्य के उदयपुर जिले में स्थित पिछोला झील का निर्माण सन् 1387 में राणा लाखा के काल में एक पिछू / छिंत नामक चिठौनार बंजारे ने अपने बैल की स्मृति (याद) में करवाया था। यह झील उदयपुर की सबसे प्राचीन तथा सबसे सुंदर झील है।
- सन् 1525 ईस्वी में राणा सांगा ने पिछोला झील का जीर्णोद्धार करवाया था इस झील को पक्का कराने का श्रेय राणा उदयसिंह को जाता है।

12. उदयसागर झील जिले नौखलागढ़ (नौखलागढ़) झील भी कहा जाता है राज्य के डूंगरपुर जिले में स्थित है। इस झील तट पर पुराने राज्य (महाराव पुंजा) द्वारा निर्मित प्रसिद्ध "आइलैंड महल" स्थित है तथा तट पर कार्तिकाई का आयोजन किया जाता है।
13. सालसागर झील राज्य के जयपुर जिले में स्थित है जबकि सालसरोवर झील राज्य के झालावाड़ तथा सवाई माधोपुर जिले में स्थित है।
14. झालावाड़ जिले में स्थित सालसरोवर झील को कोटरा झील भी कहते है।
15. जैसलमेर में स्थित अमरसागर, नाड़ीसर झील तथा दूध जैसे मीठे पानी की झीलें है जबकि सेवादेर तथा कायदेर झील खारे पानी की झीलें है।
16. सरदारसमंद झील जोधपुर में स्थित है। इसका निर्माण महाराजा उम्मेदसिंह द्वारा करवाया गया।
17. इंदौरसाई का तालाब जोधपुर जिले में स्थित है। यहाँ डोलोमाईट पाया जाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. कौन सा सुमेलित नहीं है-
   (a) सेवण घासभूमि की पहाड़ियाँ
   (b) नागमती नदी- नाग्रह पहाड़ियाँ
   (c) आनासागर नदी - अरावली पहाड़ियाँ
   (d) साही नदी - चम्बलघर की पहाड़ियाँ उत्तर - b

2. राजस्थान की सर्व प्रथम प्रकाशित नदी है ?
   (a) अनास (b) भंवाल
   (c) लूणी (d) साबरमती उत्तर - (b)

3. किस नदी पर ईस्ट-वेस्ट कोरिडोर के अधीन "हैरिटेज ब्रिज" बनाया जाना प्रस्तावित है -
   (a) कालीसिन्ध (b) अनास
   (c) लूणी (d) भंवाल उत्तर - (d)

4. निम्न में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?

	मुख्य नदी	सहायक नदी
(a)	पश्चिमी अनास	अकवाड़ी
(b)	साही	बाण
(c)	अनास	सीवू / सुकवणी
(d)	लूणी	सागी

उत्तर - (c)

5. अल्प प्रवाहित नदी नहीं है?
   (A) साही (b) काकनी
   (c) चाखी (d) कांतली उत्तर-(c)

6. राजस्थान राज्य में क्षेत्र-क्षेत्र की लम्बाई की दृष्टि से नदियों का सही आरोही क्रम है-
   (a) कांतली - भंवाल - लूणी - अनास
   (b) भंवाल - लूणी - अनास - कांतली
   (c) लूणी - अनास - कांतली - भंवाल
   (d) अनास - कांतली- भंवाल- लूणी उत्तर - (a)

7. टोड रोक किस झील से सम्बंधित है-
   (a) सांभर झील (b) पुष्कर झील
   (c) जयसमंद झील (d) सिलीसेढ़ झील उत्तर (a)

8. निम्न में से कौन सी नदी सांभर झील से निकली है-
   (a) रूपेल (b) कांतली
   (c) खारी (d) साबरमती उत्तर- (a)

9. आनासागर झील का निर्माण किसने करवाया -
   (a) पृथ्वीराज (b) राजसिंह
   (c) अर्णोराज (d) जयसिंह उत्तर - (c)

INFUSION NOTES WITH ONLY THE BEST WILL DO

- यह संस्थान 1966 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तिलहन में आया। आजादी जोधपुर स्थित मुख्यालय से 6 संस्थान कार्यरत है।
- इसके बाद क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र विभिन्न कृषि-जलवायु स्थितियों से स्थान आधारित समन्वयात्मक अनुसंधान हेतु स्थित है।

14. सुबबूल या विलायती बबूल-भू संरक्षण की दृष्टि से यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वृक्ष है जो मृदा के कटाव पर रोक लगाता है।

15. सिराई गुडाई :-इसका शाब्दिक अर्थ है चक्रवातवार हटाना। राजस्थान में भूमि के कटाव को रोकने के लिए प्रायमिक भू परिष्करण की प्रक्रिया सिराई गुडाई कहलाती है। इससे भूमि कृषि योग्य बनती है। जिससे पानस का उत्पादन अधिक होता है।

16. बालरा / चिमाड़ा / टाजिमा / - अत्यधिक घर्षणशील

"सारांश"

- अमेरिकी वैज्ञानिकों द्वारा 11 भागों में बाँटी गई मृदा के 5 प्रकार राजस्थान में पाए जाते है जो कि एरिडीसोल एरिडीसोल, अल्फीसोल, एंटिसोल इनसेप्टीसोल।
- राजस्थान में सर्वाधिक सिट्टी को सर्वाधिक उपयोग लाया जाता है।
- कपास के अधिक उत्पादन के कारण काली सिट्टी को कपासी सिट्टी भी कहा जाता है। यह कोटा, बूंदी, झालावाड़ में पाई जाती है।
- 1952 में स्थापित केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान केन्द्र जोधपुर- जोधपुर राजस्थान से संबंधित है।
- लिक्विफेक्शन की क्रिया द्वारा निर्मित सिट्टी को लेटेराइट कहा जाता है।
- कार्बोनेट एवं हाइड्रोकार्बन तत्वों की अधिकता वाले पानी को टैरीन पानी कहा जाता है।
- मृदा कटाव पर रोक के कारण सुबबूल / विलायती बबूल भू-संरक्षण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वृक्ष है।
- मरुस्थलीय प्रदेश में 90 से 150 Cm. की गहराई से स्थित कठोर चट्टानों को हार्ड पेन कहा जाता है।
- मरुस्थलीय सिट्टी को रेतीली लगरा भी कहा जाता है।
- राष्ट्रीय कृषि आयोग ने राजस्थान के 12 जिलों (उदयपुर से 21) को मरुस्थलीय जिलें मानकर 16 जिलों में सघ विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें केंद्र सरकार द्वारा 75% तथा राज्य सरकार द्वारा 25% राशि ग्रहण किया जाता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. मृदा की क्षारीयता व लवणता की समस्या को दूर करने हेतु प्रयोग किया जाता है
   a. बूरिया b. रॉक-फास्फेट
   c. जिप्सम d. चाक उत्तर - C

2. राजस्थान के किस प्रदेश में एंटिसोल समूह की मृदा मिलती है?
   a. पूर्व b. पश्चिमी
   c. दक्षिणी -पूर्व d. दक्षिणी उत्तर- b

3. राजस्थान के किस क्षेत्र में भूकम्प से काली सिट्टी पाई जाती है?
   a. हाड़ौती b. थार
   c. पूर्वी मैदान d. मगरा क्षेत्र उत्तर- (a)

4. सुमेलित कीजिए :-

सिट्टी के प्रकार	मरुस्थलीय प्रदेश
a. एरिडीसोल्स	1. शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क
b. इनसेप्टीसोल्स	2. अर्द्ध शुष्क एवं आर्द्र
c. अल्फीसोल्स	3. उप-आर्द्र एवं आर्द्र
d. एंटिसोल्स	4. आर्द्र एवं अति आर्द्र

कूट	a	b	c	d
A.	1	3	4	2
B.	1	2	3	4
C.	1	3	2	4
D.	4	1	2	3

उत्तर - b

5. सिंधु में से किस प्रकार की सिट्टी में सबसे गुताई का गुण पाया जाता है?
   a. काली सिट्टी b. सलोढ़
   b. शुष्क सिट्टी d. लेटेराइट उत्तर - A

अध्याय – 3

हस्तशिल्प

- राजस्थान की हस्तशिल्प विश्व प्रसिद्ध है इसलिए राजस्थान को हस्तकलाओं का अजायबघर / चलायमान कहा जाता है।
- हस्तकला उद्योग केन्द्र जोधपुर, जोधपुर में है।
- हस्तकलाओं का शहर जयपुर को कहते हैं।
- राजस्थान में हस्तकला उद्योग को संगठित स्वरूप देने वाला संस्थान राजस्थान है जिसकी स्थापना 3 जून, 1961 को जयपुर में की गई थी। राजस्थान की हस्तशिल्प वस्तुओं को राजस्थान एवं उद्योग जिसका राजस्थली नाम से विपणन करता है।
- वर्ष 1998 की औद्योगिक नीति में हस्तकला उद्योग को संगठित स्वरूप दिया गया है।

❖ पॉटरी

- चीनी मिट्टी के बर्तनों पर की जाने वाली आकर्षक चित्रकारी पॉटरी कहलाती है।
- पॉटरी का उद्भव ट्यूनिशिया (सीरिया की राजधानी) से माना जाता है जो फारस, अफगानिस्तान होती हुई भारत आयी।

❖ ब्लू पॉटरी



- चीनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।
- इसके लिए जयपुर प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय आलमसिंह को है।
- इस कला का संगठित विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुनर्जीवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिसको पद्म श्री सम्मान से सम्मानित किया है।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पद्म श्री पुरस्कार दिया जा चुका है।
- ब्लू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई है।

> राजस्थान में 'ब्लू पॉटरी' का प्रमुख केन्द्र कौन - सा है ?
> (a) डीकानेर (b) डूंगरपुर
> (c) जयपुर (d) जैसलमेर

> राजस्थान की प्रसिद्ध ब्लू पॉटरी की हस्तकारी का उद्भव कहाँ से हुआ है।
> (a) अजमेर (b) पश्चिमी
> (c) अफगानिस्तान (d) सिंध

❖ ब्लैक पॉटरी

- ब्लैक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध है।

❖ कागजी पॉटरी

- कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध है।

❖ मोलेला पॉटरी

- मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध है।

❖ बीकानेरी पॉटरी (सुनहरी पॉटरी)

- इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता है।

❖ मूलस्थानी / उस्ता कला



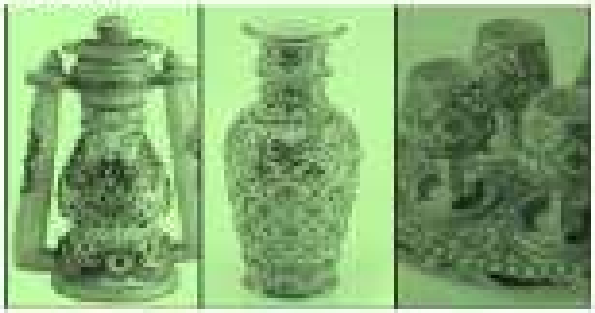
- इस कला में ऊँट की खाल पर सुनहरी नक्काशी की जाती है। यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- हिसामुद्दीन उस्ता कला के प्रमुख चित्रकार है, जिन्हें इस कला के लिए वर्ष 1986 में पद्मश्री दिया गया था। मुहम्मद हनीफ उस्ता, कादर बक्श इनके कारीगर है।
- उस्ताकला को बढ़ावा देने हेतु बीकानेर में कैमल स्किन ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना 15 अगस्त, 1975 को की गई थी जिसके प्रथम निदेशक हिसामुद्दीन उस्ता को बनाया गया था।
- हनवन्त बक्श ने ऊँट की खाल पर बीकानेर शासक महाराजा गंगासिंह का चित्र बनाया।

❖ मथैरणा कला



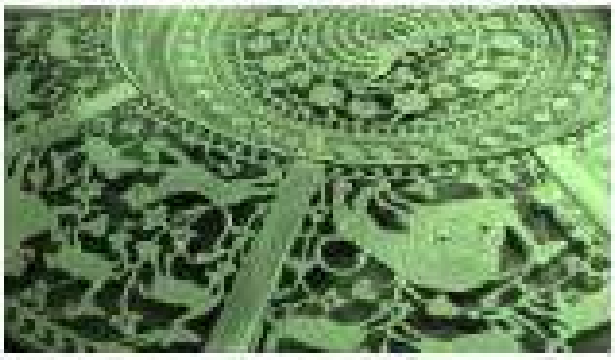
- इस कला में कपड़े पर सुनहरी नक्काशी की जाती है।
- यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- इस कला में ईसर, गणगौर, देवी - देवताओं की सांचि चित्र बनाये जाते है।
- मुक्ताप्रसाद, चन्द्रप्रकाश मथैरणा कला के प्रमुख कारीगर थे।

मीनाकारी



- विभिन्न रंगों की मूल्यवान पत्थरों पर सोने की सहायता से तथा सोने - चाँदी के आभूषणों पर चित्रकारी या रंग भरने की कला को मीनाकारी कहते हैं।
- मीनाकारी कला का उद्भव पर्शिया (ईरान) से माना जाता है।
- ताज इस शैली से जयपुर के कारीगर जुड़ाव है।
- मीनाकारी में फूल-पत्ती, बेल आदि का अंकन प्राय: किया जाता है।
- कोटा के रेतवाली ब्लैक से कांच पर विभिन्न रंगों से मीनाकारी का काम किया जाता है।
- आगरा जैसे पत्थर पर मीनाकारी करने के लिए शाकावेद के मीनाकार प्रसिद्ध हैं।
- इसे चाँदी के साथ सोने से तथा गहरे और चटख से तुलाई द्वारा तांबे में बनी गई जगहों पर सिरकों द्वारा यह कार्य किया जाता है।
- तांबे से सहारनपुर नानकसिंह प्रथम द्वारा आगरे में लाया गया।
- जिसमें कुशल मीनाकार हरिसिंह अलरसिंह किशनसिंह गोकलसिंह रणजीसिंह थे।
- राज्य में सिद्ध मीनाकारी प्रसिद्ध है-
  (i) चाँदी पर मीनाकारी- लाखेरा, राजसमंद
  (ii) पीतल पर मीनाकार जयपुर
  (iii) तांबे पर मीनाकारी- मोलेला
  (iv) सोने पर मीनाकारी- प्रतापगढ़
- अलीगढ़ में जयपुर की मीनाकारी प्रसिद्ध है, जिसमें कुशल रूप से कुंदनसिंह तथा कुशल ताज (गुरुचरण सिंह) विख्यात हैं।
- सरदार कुंदन सिंह को 1988 में इस कला के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

मेहंदी कला



- मेहंदी कला प्रतापगढ़ की प्रसिद्ध है।
- मेहंदी कला का काम इलस्ट्राइकरोपिडिया और प्रिटेरिका से अंकित है।
- कांच पर सोने या चाँदी का सूक्ष्म चित्रांकन जिसमें हीरा डेलिनेशन कांच का प्रयोग किया जाता है। इस कला की शुरुआत लगभग 500 वर्ष पूर्व लाखेरी सोनी से सहारावा साहब सिंह के समय प्रतापगढ़ में की थी।
- इस कला के लिए प्रतापगढ़ का सोनी परिवार विख्यात है।
- इसे सोनी परिवार आदत का एकलाख ऐसा परिवार है जिसे किसी हस्तकला के लिए एक ही परिवार के सर्वाधिक व्यक्तियों को राष्ट्रपति पुरस्कार दिया जा चुका है।
- मेहंदी कला के आदीनाथ पद्मीनाथ आदवाले हैं।

रक्षाकुशन

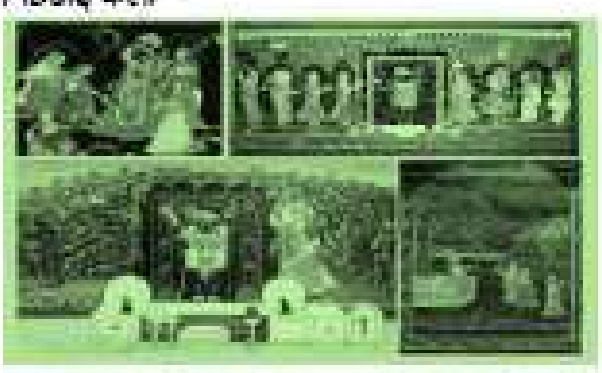
- हीरे - जवाहरात-पन्ना का कार्य रक्षाकुशन कहलाता है।
- विश्व की सबसे बड़ी मण्डी जयपुर है।

कोफ्तगिरी



- राजस्थान में इसके प्रमुख केन्द्र जयपुर व अलवर हैं।
- कोफ्तगिरी का कार्य ईरानियन से पंजाब लाया गया और पंजाब से गुजरात तथा गुजरात से राजस्थान लाया गया।
- पीतल की ढली हुई वस्तुओं पर यह काम सोने के पतले तारों की बनावट द्वारा किया जाता है।
- लहरिया के काम से डिजाइन को गहरा खोद कर उसमें पतला तार भर दिया जाता है। अलवर के कारीगर साफ एवं उदयपुर के सिनाईनगर यह काम सुन्दर ढंग से करते हैं।
- कोफ्तगिरी शिल्प का इस्तेमाल ढाल, तलवारों व खंजर और अन्य उपयोगी सामग्री जैसे डिब्बे, ढक्कने, मोमबत्ती काटने और चाबी के कटारनुमा सामान शिकार चाकू, छुरी इत्यादि के निर्माण में किया जाता है
- इसके कलाकार को कोफ्तगर कहा जाता है।

पिछवाई कला



➢ जीण माता



- चौहान वंश की आराध्य देवी।
- ये धंधराय की पुत्री एवं दुर्ग की रक्षक भी।
- मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है।
- इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राणा हट्ठड़ द्वारा करवाया गया।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक कार से ढाई प्याला मदिरा पान करती है।
- इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब चिपाई जाती है।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ है। इनकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती है।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा है।
- जीणमाता का अन्य नाम आशापूर्णा देवी है।
- जीण माता को शेखावाटी क्षेत्र की लोक देवी व सप्तसन्निकेतों की देवी के नाम से जाना जाता है।
- यहाँ अज बेचाल झकरे के काल चढ़ाते हैं।

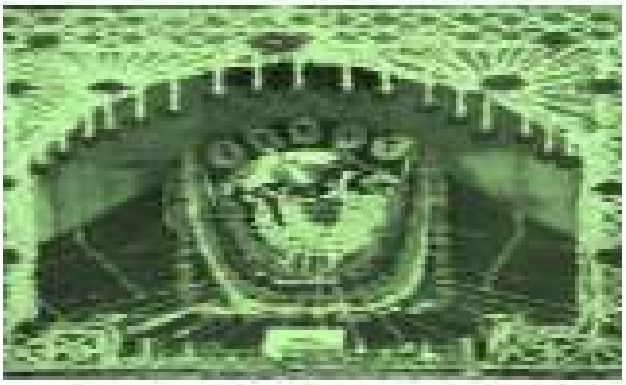
> राजस्थान के लोक साहित्य में किस देवी - देवता का गीत सबसे लम्बा है ? (RAS 2010)
> (a) जीणमाता (b) गोगाजी
> (c) आईमाता (d) तल्लीनाथ जी

➢ कैला देवी



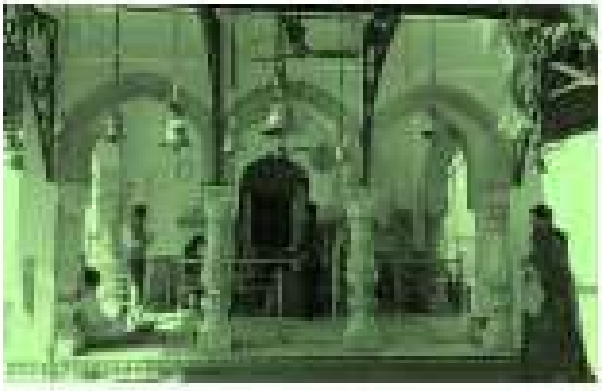
- करौली के यदुवंश (जादौनवंश) की कुल देवी।
- इनकी आराधना में लांगुरिया गीत गाये जाते हैं।
- कैला देवी का सबसे मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ल अष्टमी को लगता है।
- कैला देवी मंदिर के सामने क्षोत्रा की छतरी है।
- कैला देवी को भैंस का भोग नहीं लगता।
- इसका मंदिर 19वीं शताब्दी में गोपाल सिंह द्वारा कालीसिंध नदी के मुहाने पर त्रिकूट पहाड़ी पर बनवाया गया।
- यहाँ मुटकल कुण्ड प्रसिद्ध है जिसे गुजरी व जीण माता के गोना कहते हैं।

➢ शिला देवी



- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी।
- इसका मंदिर आमेर दुर्ग में है।
- शिलामाता की यह मूर्ति काले पत्थर से बनी संगमरमर में निर्मित है।
- आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर जस्सोर जनपद से अष्टभुजी अम्बिका की मूर्ति 16वीं शताब्दी में आमेर लाए थे।
- आमेर लाकर उन्होंने आमेर दुर्ग से स्थित जलेब चौक के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में मंदिर बनवाया था
- मान्यता है कि इस देवी की नहीं पूजा होती है उसे कोई नहीं मार सकता।
- शिला देवी को ढाई प्याला शराब चढ़ती है तथा भक्तों को शराब व मदन का चरणामृत दिया जाता है।

➢ अन्नपूर्णामाता



- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी।
- इसका मंदिर अन्नपूर्णा राजगढ़, जमवारामगढ़ में है।
- इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के पृथ्वीराज द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNIc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4n5xE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mK6dtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/Zgzzf3yt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 में से)

whatsapp - https://wa.link/0yupe6 1 web.- https://shorturl.at/pwFNP

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp - https://wa.link/0yupe6 2 web.- https://shorturl.at/pwFNP